c. प्र *Caus.* facere ut alq. cadat. Mah. 1.5561.: आनाम्य फलितां शाखाम् पक्काम् पक्काम् प्रशातयेत्।

c. वि *Caus.* discutere, disjicere. Mah. 3.11971.

c. सम् *Caus.* facere ut alq. cadat. Mah. 3.865.: वज्रम् उद्यम्य तान् सर्वान् पर्वतान् समशातयम्।

शनकैस् *Adv.* (*Instr. pl.* ab inusitato शनक, quod derivatur a शन - v. शनैस् - suff. क) lente, tarde, paulatim, gradatim. N. 17.13.

शनैस् *Adv.* (*Instr.* ab inusitato शन) lente, tarde. In. 2.24. H. 2.22. 4.26. Su. 4.10.

1. शप् 1. *P. A.* 1) *A.* jurare. Man. 8.110.: वसिष्ठश्चा 'पि शपथं शेपे पैयवने नृपे (Loc. pro Dat.); R. Schl. II. 75.40.: शपथैः कष्टैः शपमानम्... भरतम्... कौशल्या वाक्यम् अब्रवीत्। *Cum instr. rei vel pers. per quam quis jurat.* Ghat. 22.; R. Schl. II. 21.16.: सत्येन धनुषा चै 'व दत्तेने 'ष्टेन ते शपे; II. 11.8.: तेन रामेण कैकेयि शपे ते वचनक्रियाम्; 34.47.48.21. Mah. 1.5178. 2) *P. A.* maledicere, exsecrari. In. 5.48.: शशाप 'थ धनञ्जयम्; N. 20.34.: कुपिता मा 'शपत्; Mah. 1.4583.: तस्मात् त्वाम् अद्य अहं शपे; 3.351.: पुत्रन् ते शप्स्यते। — *Absol.* R. Schl. I. 58.8.: शेपुः परमसङ्क्रुद्धाश् चण्डालत्वङ् गमिष्यसि। — *Caus.* शापयामि jurare jubeo. Man. 8.113. (Fortasse शप् primitive dicere, loqui significavit, cf. शब्द sonus, quod fortasse e शप् + द् dans; hib. *cubhais* «an oath», *cubhas* «a word, a promise», *cab* «a mouth».)

c. अभि maledicere, exsecrari. R. Schl. II. 49.48.: त्वाम् अभिशप्स्ये ऽहं सुदुःखम् अतिदारुणम्।

2. शप् 4. *P. A. i. q.* 1. शप्।

शपथ *m.* (r. शप् s. अथ) jusjurandum.

शफ *n.* ungula *equi.* Am. (Germ. vet. *huof*, island. vet. et anglo-sax. *hôf.*)

शफर *m.* शफरी *f.* piscis species. (Wils. *a sort of carp,* Cyprinus chrysoparius). Am.

शब्द् 10. *P.* शब्दयामि (ut videtur, Denom. a seq.) dicere. Mah. 3.14400.: षण्णान् तु प्रवरन् तस्य शीर्षाणाम् इह शब्द्यते। — *Caus.* शब्दापयामि facio ut quis vocetur, advocetur, arcesso. R. Schl. II. 59.7.: यदि मां रामः पुनः शब्दापयेत्। (V. शप् et cf. Caus. r. दा, दापयामि, cf. etiam जीवापयामि p. 140. annot.)

c. अभि dicere. Man. 6.82.: यद् एतद् अभिशब्दितम्। Nominare. Mah. 1.3927.: दक्षस्य दुहिता या तु सुरभी 'त्य् अभिशब्दिता।

c. सम् dicere, loqui. Mah. 1.3215.: अयम् एती 'ति संशब्द्य।

शब्द *m.* sonus, clamor, strepitus. H. 4.21. Br. 1.3. Su. 1.32. (*Vid.* शप्.)

1. शम् 4. *P.* शाम्यामि (gr. 331[a].) sedari, tranquillari, placari, extingui. Gita-Gov. 7.41.: शाम्यतु देहदाहः; Ragh. 2.14.: शशाम वृष्ट्या 'पि विना दवाग्निः; Man. 2.94.: न जातु कामः कामानाम् उपभोगेन शाम्यति; Mah. 2.1936.: शाम्य मा शुचः; Ragh. 7.3.: समत्सरो ऽपि शशाम तेन क्षितिपाललोकः। — शान्त 1) sedatus, pacatus, tranquillus, placidus. H. 1.49.: शान्तार्चिर् इव पावकः; Hit. 80.21.: शान्ते पानीयतोये; N. 12.112.: सुशान्ततोयाम्... ह्रदिनीम्; 24.53.: शान्तज्वरा; Sa. 6.18.: शान्तायान् दिशि। 2) interfectus (v. Caus.). Mah. 1.7523.: दिष्ट्या शान्तः पुरोचनः। — *Caus.* शमयामि 1) sedare, tranquillare, domare, extinguere. Mah. 3.72.: मानसं (दुःखम्) शमयेत् तस्माज् ज्ञानेना 'ग्निम् इवा 'म्बुना; Hit. 24.6.: सुतप्तम् अपि पानीयं शमयत्य् एव पावकम्। 2) occidere, interficere. Mah. 3.14620.: सो ऽयन् त्वया महाबाहो शमितो देव कण्टकः। (Hib. *samh* «pleasant, still, calm, tranquil»; lith. *kenćiu, kentĕju* patior, tolero, *kanćia* dolor, *kantrùs* patiens, tolerans, *pa-kintu* patientiam adhibeo, v. शान्ति; fortasse nostrum *san-f-t*, inserto *f*, - v. gr. comp. 96. - mutatâ gutturali in sib.; germ. vet. *samft*, angl. *soft*, fortasse etiam germ. vet. *sûmjan* tardare (nostrum *säumen*), *sûmig* negligens; island. vet. *sems* tardatio; gr. κηλέω. Cf. क्षम्.)

c. उप *i. q. simpl.* Mah. 3.72. et 1008.: नो 'पशाम्यति मे मनः। — *Caus.* उपशामयामि 1) sedare, tranquillare. Mah. 1.6577.: पुष्पायुधम्... उपशामय कल्याणि आ-